1. प्रस्तावित विषय का शीर्षक

गंदी बस्तियों में रहने वाली महिला श्रमिकों की आर्थिक, सामाजिक एवं स्वास्थ्य की दशाएंः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।

(रायपुर नगर के संदर्भ में)

2. प्रस्तावनाः-

गंदी बस्तियां औद्योगिकता का फलन है जो कई सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं को जन्म देती हैं। जहां पर मूलभूत आवश्यक्ताएं जैसे - पानी,विद्युत, जल निकासी, स्वच्छ वातावरण, सड़के आदि सुविधाओं का अभाव होता हैं। भारत में औद्योगिक क्रांति की लहर काफी देर से आई और आज भी विश्व के अन्य देशो की तुलना में काफी कम हैं, फिर भी भारत इस समस्या से अछूता नहीं रहा हैं। भारत के महानगरों जैसे- बम्बई, दिल्ली, मद्रास, कल्कत्ता में उद्योगों का तेजी से विकास होने के कारण ग्रामीण क्षेत्रों की जनसंख्या इन औद्योगिक नगरों की ओर प्रवासित होती हैं। प्रवासित जनसंख्या मुख्यतः प्रतिकूल तत्व जैसे- गरीबी, बेकारी, कम मजदूरी, छोटी तथा अनार्थिक जोत, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं की कमी आदि तथा अनुकूल तत्व जैसे रोजगार की सुविधा, उंची दर, मजदूरी के निश्चित घंटे, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं मनोरंजन आदि के कारण शहरों की ओर केन्द्रित होने लगती हैं।

उपरोक्त जनसंख्या वृद्धि, गरीबी, अपराध वृद्धि एवं समाज में व्याप्त विषमता ही झुग्गी-झोपड़ियों का मूल कारण हैं, भोजन, वस्त्र एवं आवास का अभाव ही इन झोपड़-पट्‌टियों का मूल कारण हैं। झुग्गी-झोपड़ियां भारत के हर गांव में और महानगरों के हर कोने में विद्यमान हैं। महानगर बम्बई, कल्कत्ता में ही कुल जनसंख्या की आधी लगभग आधी आबादी झोपड़-पट्‌टियों में तथा फुटपाथ और गलियों में रहती हैं।

ब्रिटिश भमिक संघ कांग्रेस का एक विशिष्ट मंडल 1928 में भारत आया था जिससे भारतीय श्रमिकों की आवास व्यवस्था पर जो टिप्पणियां की हैं उन्ही के शब्दों में -''हम जहां कहीं भी ठहरे, वहां श्रमिकों के निवास स्थानों को देखने के लिए गए और यदि हमने उन्हें नही देखा होता तो हमें इस बात का कभी विश्वाय नहीं हो सकता था कि इतने खराब दशा के भी मकान हो सकते हैं।

मकानों की यही दशा गंदी बस्तियों का मूल कारण हैं गंदी बस्तियों को अलग-अलग नाम से पुकारा जाता हैं जैसे बम्बई में चाल

तमिलनाडु में चेरी,

कल्कत्ता में बस्ती

कानपुर में अहाता

समय-समय पर श्रम समितियों व अन्य विवेकशील व्यक्तियों ने यह सुझाव दिया है कि इन गंदी बस्तियों को समाप्त कर दिया जायें।

गंदी बस्तियों की पहचान व अर्थ :-

गंदी बस्तियों ;झुग्गी-झोपड़ियोंद्ध की परिभाषा नपे तुले शब्दों में तो नहीं किन्तु इस तरह से गंदी बस्ती की विशेषताओं को बताया जा सकता है - निम्न आय वर्ग जिस खराब दशाओं में रहते है वे हमें अच्छी तरह से मालूम हैं। इनके भीड़-भाड़ युक्त क्वार्टर या झोपड़ियां जो गंदी बस्तियों के नाम से जाने जाते है देश के लगभग सभी औद्योगिक नगरों में देखने में आते है ये क्षेत्र

अस्थिर निर्माण, म्यूनिसिपल सेवाओं की कमी के कारण मानवीय निवास के आयोग्य है ऐसे क्षेत्र या मोहल्ले को गंदी बस्ती या झुग्गी-झोपड़ी कहते हैं।

झुग्गी-झोपड़ियों के उदय के कारणः-

झुग्गी-झोपड़ियों के उदय के प्रमुख कारणों को निम्न भागों में विभक्त कर अध्ययन किया जा सकता हैं। यहां पर केवल मुख्य कारणों का ही विवेचन किया गया हैं -

1.गांवो से शहरों की ओर रोजगार के लिए प्रवासः- भारत में अधिकांश जनसंख्या गांवो में निवास करती है तथा कृषि पर मुख्य रुप से प्राकृतिक कारणों जैसे वर्षा, जलवायु इत्यादि पर निंभर करती है कृषि क्षेत्र में ज्यादातर लोगों के लगे रहने से प्रति व्यक्ति आय उनकी बहुत कम है तथा कृषि भी एक निश्चित समय में की जा सकती है। बाकी ग्रामों में अन्य समय रोजगार की कोई अन्य सुविधा उपलब्ध नहीं है जिससे ग्रामीण को विवश होकर जीविकोपार्जन हेतु शहर की ओर प्रवास करना पड़ता हैं।

2.शहर मे आवास की समस्याः- यह भी झुग्गी झोपड़ियों के उदय का मुख्य कारण है। शहरों में अधिक जनसंख्या होने के कारण तथा भूमि की सीमितता के कारण आवास की एक गंभीर समस्या रहती है जो झुग्गी झोपड़ियों का रुप धारण करती हैं।

3.बीमारी सम्बन्धी कारण :- आर्थिक द्रष्टि से कमजोर लोगो को बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिसमें प्रमुखतः आय की कमी, आश्रितों की अधिकता, और अन्य कई सामाजिक समस्याएं है। कई रोग छुआछूत के भी होते है जैसे कुष्ठ रोग, तपेदिक आदि इन रोगो के कारणवश भी लोग शहर के बाहरी इलाकों या गंदे स्थानों में रहने को मजबूर हो जाते हैं।

4.गंदी बस्तियों में कार्यरत महिला श्रमिकः देश की कुल महिला श्रम शक्ति में अधिकांश महिलाएं झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाली कार्यरत महिलायें होती हैं। जो छोटे-छोटे कार्यो में लगी होती हैं।

5.अवैध कब्जों की बढ़ती प्रवृत्तिः- भूमि की सीमितता जनसंख्या का तीव्रतम विस्फोट के फलस्वरुप तथा शहर में ग्रामीण जनसंख्या की बढ़ती हुई प्रवृत्ति के कारण आवास की गंभीर समस्या बनी हुई रहती है। अतः निम्न आय स्तर के लोग शहर के खाली क्षेत्रों में अवैध कब्जा कर निवास करने लगते है।

गंदी बस्तियों में कार्यरत महिला श्रमिकः- देश की कुल महिला श्रम शक्ति में अधिकांश महिलाएं झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाली होती हैं। गंदी बस्तियों में रहने वाली ये महिला श्रमिक अशिक्षित व निम्नवर्गीय परिवार से होती है। शिक्षा की कमी व पारिवारिक आय कम होने से अधिकांश महिलाएं इन बस्तियों की छोटे-छोटे कार्यो में लगी रहती है व परिवार का भरण पोषण करती हैं। इन महिला श्रमिकों के लिए शिक्षा तथा प्रशिक्षण की कोई सुविधा नहीं होती। निम्न वर्ग की ये महिलाएं आर्थिक कठिनाईयों के कारण ही मजदूरी करती हैं।

गंदी बस्तियों की विशेषताएं :-

गंदी बस्तियों में कुछ विशिष्ट विशेषताएं होती है, जिससे ये क्षेत्र नगर में स्पष्ट रू‹ से पहचाने जा सकते है। लेखराज सिंह(1985,86) ने अपने अध्ययन में भारत की गंदी बस्तियों की विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए लिखा है -" as an area of poor houses and poor people, it an area of transition and decandence, a disorgnised area occupied by human deralicts, a catch all for the criminals for the defective the down and out.''इस प्रकार नगर की विशिष्ट संरचना वाले इन गंदी बस्तियों में मुख्य रूप से निम्नांकित विशेषताएं पाई जाती है -

1. **गरीबी** - गरीबी के कारण गंदी बस्ती के निवासी नगर के सुविधायुक्त मकानों का किराया देने में असमर्थ होते है। अतः शासकीय अथवा निजी रिक्त भूमि पर आवास निर्मित कर निवास करते है, इस प्रकार गरीबी इन बस्तियों की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

2. **सामाजिक सेवाओं की अपर्याप्तता** – गंदी बस्तियों में उपलब्ध बुनियादी सुविधाएं अपर्याप्त होती है। यहां सफाई का अभाव होता है; जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव यहां के निवासियों के स्वास्थ्य पर पड़ता है। इसके साथ ही शुद्ध पेयजल, बिजली, शौचालय, मार्ग तथा अन्य स्वास्थ्य सेवाओं का समुचित उपलब्धता नहीं पाई जाती है।

3. **भीड़-भाड़** – इन बस्तियों में जनसंख्या की अधिकता के कारण भीड़-भाड़ अधिक होती है।

4. **पर्यावरण प्रदूषण** – इन बस्तियों में जल, मल निकासी एवं कचरा फेंकने की उचित व्यवस्था नहीं होती, अतः गंदगी एवं दुर्गंध के कारण इन क्षेत्रों में प्र्यावरण प्रदूषण पाया जाता है।

5. **निम्न नैतिकता** – गंदी बस्तियों के निवासियों में नैतिकता की कमी पाई जाती है। यहां के अधिकांश व्यक्तियों में नशा, जुआ, बाल-अपराध, यौन-अपराध आदि की प्रवृत्ति पाई जाती है।

6. **पृथकता** – गंदी बस्तियों में निम्न आय वाले लोग निवास करते है, उनका नैतिक स्तर निम्न होता है, सामाजिक प्रतिष्ठा निम्न होती है, जिससे वे समाज से पृथक रहना चाहते है।

7. **अंधविश्वास एवं अशिक्षा** – गंदी बस्तियों में शिक्षा का स्तर निम्न होता है। शिक्षा की कमी के कारण सामान्यतः यहां के निवासी अंधविश्वासी एवं रूढ़िवादी होते है।

8. **गंदगी एवं बिमारीयां** – सफाई की कमी यहां के निवासियों की अज्ञानता के फलस्वरूप इन बस्तियों में गंदगी एवं बिमारीयों की बहुलता पाई जाती है।

9. **असामाजिक तत्वों का आश्रय-स्थल** – नगर के अधिकाशं अपराधिक एवं असामाजिक प्रवृत्ति के लोग प्रायः गंदी बस्तियों में निवास करते है

10. **निम्न आवासीय दशा** – गंदी बस्तियों में निर्मित मकान प्रायः मिट्टी एवं ऐसे पदार्थ से बनाए जाते है। जिसे आंधी, तूफान, तेजवर्षा व अन्य प्राकृतिक विपत्ति के समय सुरक्षित रखना कठिन होता है।

11. **नियोजित मार्ग का अभाव** – गंदी बस्तियों के मार्ग नियोजित नहीं होते है। अतः उनकी चौड़ाई प्र्याप्त नहीं होती है। संकरी गलियों की अधिकता पाई जाती है।

12. **स्थिरता** – गंदी बस्तियों की प्रमुख विशेषता उनकी स्थिरता भी है। एक स्थान से हटाए जाने पर दूसरे स्थान बस जाते है।

3. उपलब्ध साहित्य की विवेचना

गंदी बस्तियों के सम्बन्ध में विद्धान, समाज सुधारक तथा राजनीतिज्ञ प्रायः चिंतित रहे हैं, किन्तु शोध कार्य इस क्षेत्र में बहुत विलम्ब से प्रारंभ हुआ जबकि गंदी बस्तियों के र्निमाण का क्षेत्र बढ़ते हुए औद्योगीकरण को दिया जा सकता हैं, जितनी तेजी के साथ गंदी बस्तियों का र्निमाण हुआ हैं उतनी ही धीमी गति से इस क्षेत्र में शोध कार्य किए गए हैं :-

“गंदी बस्तियों के सम्बन्ध में किए गये अध्ययन”

गंदी बस्तियों से आशय क्या हों, उसका मापदंड हो इस संबंध में पर्याप्त सैद्धांतिक मतभेद उभरते रहे है, कुछ एक तुलनात्मक अध्ययन गंदी बस्तियों और स्वच्छ बस्तियों को लेकर किए गए है किन्तु ये तुल्नात्मक अध्ययन व्यक्तियों के रहवास और रहन-सहन के स्तर को लेकर किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि एक सीधी व सरल परिभाषा प्रतिपादित करना सरल नहीं भारत के संदर्भ में गंदी बस्तियों को लेकर सबसे पहले अध्ययन बबंई म्यूनिसिपल कार्पोरेशन के एक सर्वेक्षण द्धारा 1956-57 में किया गया। सबसे पहला प्रकाशन सन्1958 में भारत सेवक समाज ने पुरानी दिल्ली में स्थितगंदी बस्तियों को लेकर किया गया था।

अब्राहम (1964)ने स्वीकार किया है कि गंदी बस्तियों के संदर्भ में अधिकांश अध्ययन आवास तथा शहरीकरण को लेकर किया गया हैं। डा.सलूजा 1979 ने गरीबी तथा गंदी बस्तियों में रहवासियों को पर्यायवाचीमाना है अतः गंदी बस्तियों के रहवासियों को गरीबी रेखा की श्रेणीमें रखा गया हैं।प्रस्तुत अध्ययन में गंदी बस्तियों के संदर्भ में उपलब्ध साहित्य की विवेचना निम्न है -

बम्बई म्यूनिसिपल कार्पोरेशन(1956)1बम्बई म्यूनिसिपल कार्पोरेशन द्वारा 1956-1957 में सर्वेक्षण किया गया। सर्वेक्षण के अनुसार बंबई में स्थित गंदी बस्तियों का विकास राजनीति एवं जनसंख्या में वृद्धि होने के कारण होता है सर्वेक्षण बम्बई की मुख्य गंदी बस्तियों कजाथीपुरा, हघस, धारवी, कोलीबाड़ा गांव, कोलाबा फोंट एरिया का किया गया।

सर्वेक्षण में पाया गया कि लाल बाग पटेल आदि अत्यधिक घनत्व वाली गंदी बस्तियां थी। कोलाबा तथा पुराना फोंट एरिया मुख्य गंदी बस्तियां थी। जो कि 8-9 एकड़ क्षेत्र में बसी थी और घनत्व946 व्यक्ति प्रति एकड़ था। जबकि वरली कोलीबाड़ा का क्षेत्र 38 एकड़ का था। इन क्षेत्रों में स्वच्छता, पानी, बिजली का अभाव था, घासी गंदी बस्ती 330 एकड़ क्षेत्र में फैली थी। सर्वेक्षण के आधार पर निष्कर्ष यह निकलता है कि यदि

इन गंदी बस्तियों में पर्याप्त सुविधाएं नहीं गई तो इनकी हालत और बदत्तर हो जाएगी जिसके लिए स्थानीय सरकार व नगर-निगम के संयुक्त प्रयास पर बल दिया गया।

दास गुप्ता समीरा(2000)7 का अध्ययन कामकाजी महिला श्रमिकों के पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डालता हैं और यह भी बताता है कि एक महिला श्रमिक इन उलझनों का कैसे सामना करती है। महिला श्रमिक अपने विकास के संदर्भ में वर्तमान आर्थिक व्यवस्था के विभिन्न इकाईयों के रुप में स्वयं को प्रतिस्थापित कर रही है, परंतु इनमें से अधिकांश प्रस्थितिवादी अकुशल महिलाएं है, जो आर्थिक मजबूरीयों के कारण व्यवसायोन्मुखी हुई हैं।

बी.एस.पदमनामन(2001)8 ने अपने अध्ययन ‘‘कृषि क्षेत्र की महिलाओं को सम्पन्न बनाने के प्रयास’’ में यह निष्कर्ष निकालते है कि फसल पैदा करने में मजदूरी के क्षेत्र में महिला- पुरुष के काम में कोई अंतर नहीं किया जाता । क्षेत्र और फसल के अनुसार महिलाओं का योगदान अलग-अलग रहता है। बुआई से लेकर फसल कटाई और इसके बाद के कार्यो में महिलाएं महतवपूर्ण भूमिका निभाती है। वे बीज का चुनाव करती है,पौधा लगाती है,निदाई,गुड़ाई करती है व हरी खाद तथा गोबर का खाद तैयार करती हैं। इसके साथ पशुधन प्रबंध और दुग्ध उत्पादन में लगी महिलाएं कई तरह के कार्य करती हैं। जैसेः- पशुओं की देखभाल,चारा जुटाना,जानवरों के तबेलों की सफाई,गोबर से खाद बनाना और दूध तथा पशु उत्पादों का प्रसंस्करण आदि शामिल है। मछली पालन के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारीता,मुख्य क्षेत्रों में मछलियों को सुखाना,बेचना,जालों की मरम्मत, और झींगा मछली का प्रसंस्करण शामिल है। जमीन के उपयोग तथा प्रबंध एवं कृषि पर आधारित ग्रामीण उद्योगों में महिलाओं की भागीदारी काफी महत्त्वपूर्ण हैं।

J.B.KOMARAIAH(2001)9 ने अपने लेख,health services and their utilization in the trible area:a case study of koyas in khammam district of andhra pradesh"के गंदी बस्तियों के क्षेत्रों में

स्वास्थ्य सेवाएं और उनके उपयाग का अध्ययन किया है। जिसमें आन्ध्रप्रदेश के खम्माम जिले की अध्ययन को प्राथमिकता दी गई हैं।

Z.T.khan(2001)10 ने अपने लेख में ,"socio-economic occupational structure and nutritional level of muslim slum dwellers in raipur city." में रायपुर नगर की मुस्लिम जनसंख्या प्रधान गंदी बस्तियों में रहने वाले लोगों की सामाजिक,आर्थिक,व्यवसायिक स्थिति तथा

हरीश केशरवानी(2010)30 लेखक के अनुसार गांवों में बेरोजगारी,अशिक्षा,खेती पर मौसम की मार और स्वास्थ्य सुविधाओं में कमी ने लोगों को पलायन के लिए प्रेरित किया है। इस पलायनवादी प्रवृति के चलते नगरों में कई अराजकताओं का लगातार विस्तार हों रहा हैं जिसमें सामाजिक अपराध,प्रदूषण,गंदी बस्तियों का निर्माण व यातायात की समस्या आम है। लेखक के अनुसार पलायन के पीछे आकांक्षाओं की पूर्ति और अवसर की उपलब्धता मुख्य कारण होते है। अतः इन्हे ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध कराने से ही पलायन पर अंकुश लगाया जा सकता है साथ ही इससे शहरों व गांवों की दूरी भी घटेगी।

पदम सिंह चौधरी(2012)31 हमारे देश की ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत निरंतर घट रहा है जिसके पीछे मुख्य कारण गांवों से शहरों की ओर पलायन है। आज देश को विकसित देशों की श्रेणी में लाने के लिए गांवों में बुनियादी विकास मूल आवश्यक है। गांवों में शहरों जैसी सुविधाएं उपलब्ध करानी होगी। देश में व्याप्त विभिन्न कुरुतियों को समूल नष्ट करना होगा तथा हर जगह शिक्षा की अलख जगानी होगी। शिक्षा के माध्यम से ही ग्रामीण जनता में जनचेतना का उदय होगा तथा वे विकास की मुख्य धारा से जुड़ सकेंगे।

ममता सागर(2012)32 भारत में गरीब मजदूरों के आन्तरिक पलायन में वृद्धि हो रही है। अनौपचारिक क्षेत्र में गरीब आमतौर पर आकस्मिक मजदूरों के रुप में पलायन

करते है। वर्ष 2001 की जनगणना अवधि के दौरान देश में ज्यादा आर्थिक लाभ वाले शहरों या दूसरे इलाकों में काम करने के लिए चौदह करोड़ चालीस लाख लोगों ने प्रवास किया। प्रवासियों की बड़ी संख्या में रिक्शा चालक,फेरी वाले,बोझा ढ़ोने वाले ,आकस्मिक मजदूर शामिल है। लेखिका के अनुसार पलायन रोकने के लिए जिसमें ये स्थायी निवासी बन सकें इसके लिए इन्हे शिक्षा के माध्यम से ऐसा ज्ञान प्रदान किया जाए जिससे ये अपने समाज के बेहतर सदस्य बन सकें।

विकास कुमार सिन्हा(2012)33 लेखक के अनुसार अशिक्षा,गरीबी व बेरोजगारी,ये तीन पलायन के लिए जिम्मेदार है,जिससे अनेक विपदाएं सामने आती है। जैसेः-गंदी बस्तियों का निर्माण,बेरोजगारी,यातायात की समस्यां। लेखक के अनुसार देश में पलायन को रोकने के लिए ग्रामीण स्तर पर मनरेगा के पारदर्शिता के साथ क्रियान्वयन की जरुरत है व इसके अलावा सरकार व स्वयंसेवी संस्थाओं को प्रचार-प्रसार करने की जरुरत हैं।

4. अध्ययन का उद्धेश्यः-

1.निदर्श परिवारों की सामाजिक एवं आर्थिक विशेषताओं का अध्ययन करना।

2.इन निदर्श परिवारों की आय, रोजगार एवं उपभोग प्रवृत्ति का विश्लेषण करना।

3.निदर्श परिवार के उस अनुपात की जानकारी प्राप्त करना जो गरीबी रेखा के नीचे अपना जीवन यापन करते हैं।

4.अध्ययन के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षोके आधार पर उपयुक्त सुझाव प्रस्तुत करना।

5.झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाली महिलाओं की स्वास्थ्य की स्थिति के कारकों को ज्ञात करना एवं स्वास्थ्य स्थिति में सुधार के लिए उपयुक्त सुझाव देना।

अध्ययन की अवधि

प्रस्तुत अध्ययन के लिए संदर्भ, वर्ष 2011-12 है जिसे लिया गया हैं, अध्ययन वर्ष के द्धारा आकड़ों का संग्रहण किया जायेगा।

5. प्रस्तावित विषय पर योगदान

इस अध्ययन के पूर्व भी इस विषय पर बहुत से अध्ययन किए जा चुके है, परंतु मैने अपने शीर्षक में 'स्वास्थ्य' विषय को अपनाकर महिलाओं की स्थिति व उनके स्वास्थ्य के स्तर को चित्रित किया है। अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया है ऐसे कौन से कारक है जो गंदी बस्तियों में निवासित महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति के साथ उनके स्वास्थ्य की स्थिति में सुधारक हों। गंदी बस्तियों में निवास करने वाली महिलाएं अधिकतर कामकाजी होती है व उनका जीवन स्तर निम्न होता है, यह अध्ययन उनके सामाजिक(उनमें शिक्षा का स्तर) आर्थिक व स्वास्थ्य की दशाओं का विवरणात्मक अध्ययन है।

6. प्रस्तावित शोध प्राविधि

किसी भी अनुसंधान कार्य में अध्ययन पद्धति का विशेष महत्तव होता हैं। कार्ल पियर्सन का कथन है-

''सत्य को पाने के लिए कोई संक्षिप्त पथ नहीं हैं। विश्व का ज्ञान प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिक पद्धति से गुजरना ही पड़ेगा''। इस प्रकार शोध अध्ययन को सार्थक और सत्य पर आधारित बनाने के लिए वैज्ञानिक पद्धति का सहारा लेना पड़ता हैं।-

1.आकड़ों का संकलनः-

प्रस्तुत अध्ययन मुख्य रुप से प्राथमिक आकड़ों पर आधारित है।

निदर्श परिवारों के सामाजिक, आर्थिक, आय, रोजगार एवं उपभोग प्रवृत्ति से सम्बन्धित आकड़ों का संकलन करने के लिए अनुसूची का प्रयोग किया गया है।आकड़ों का

संकलन करने के पूर्व अनुसूची का पूर्व परीक्षण कर प्रत्यक्ष-व्यक्तिगत अनुसंधान रीति द्धारा निदर्श परिवारों से जानकारीयां हासील की गई हैं।

2.आकड़ोका विश्लेषणः- प्रस्तुत शोध प्रबंध में उल्लेखित उद्देश्य की पूर्ति हेतु जिन-प्रमुख सांख्यिकी मापों, तकनीकियों का प्रयोग किया जायेगा। उनमें प्रमुख है-प्रतिशत विधि, औसत,गुण-सम्बन्ध गुणांक,आंतरगण एवं काई वर्ग परीक्षण।

शोध प्ररचना

प्रस्तुत अध्ययन में रायपुर नगर के गंदी बस्तियों में निवास करने वाली महिलाओं की आय, रोजगार, गरीबी एवं स्वास्थ्य स्थिति का विश्लेषण करने के लिए कुल......... परिवार निदर्श के रुप में चुने गए जो समग्र का 25 प्रतिशत है। न्यादर्श परिवारों के .. ....चयन हेतु अपनाई गई पद्धति निम्न तालिका द्धारा स्पष्टकी गई हैं।-

तालिका क्रं-1

गंदी बस्तियों का नाम	निवासरत परिवारों की संख्या	समग्र का	न्यायदर्श का आकार
अशोक नगर	692	25ः 6.92त्र25	त्र173
राम नगर	517	25ः 5.17त्र25	त्र129.25 कुल त्र302.25 त्र302

रायपुर नगर निगम के अनुसार रायपुर शहर में वर्तमान समय में 54 गंदी बस्तियां है। जिनकी कुल जनसंख्या29876 है, अध्ययन हेतु दो गंदी बस्तियों क्रमशः अशोक नगर एवं राम-नगर का चुनाव किया गया हैं। जहां पर परिवारों की संख्या क्रमशः 692 एवं 517 है। अध्ययन हेतु कुल(1209)का 25%अर्थात 302 महिला श्रमिक परिवारों को न्यादर्श के रुप में अध्ययन हेतु चुना गया।

7. प्रस्तावित विषय पर आशातीत परिणाम

प्रस्तुत शोध की मुख्य्य परिकल्पना इस प्रकार है-

1.न्यादर्श परिवार का एक बहुत बड़ा अनुपात गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहा हैं।

2.न्यादर्श परिवार के शिक्षित उत्तरदाता अपने वर्तमान कार्य से असंतुष्ट है।

अध्ययन की रुपरेखाप्रस्तुत शोध प्रबंध कुल 7 अध्यायों में विभक्त किया गया है, जिसका विवरण इस प्रकार है -

प्रथम अध्याय के प्रथम भाग में झुग्गी-झोपड़ियों का अर्थ व उदय के कारण, झुग्गी-झोपड़ियों में कार्यरत महिला श्रमिक,आर्थिक विकास में महत्तव एवं विशेषताओं का विश्लेषण किया गया है एवं द्वितीय भाग में अध्ययन का उद्धेश्य, अध्ययन की अवधि, अध्ययन की सीमाएं, आकड़ों का विश्लेषण, शोध-प्ररचना, शोध परिकल्पना का उल्लेख किया गया हैं।

द्वितीय अध्याय में उपलब्ध शोध साहित्य की वेवचना की गई हैं।

तृतीय अध्याय रायपुर नगर के संक्षिप्त वर्णन से सम्बन्धित है जिसके अंतर्गत रायपुर जिले की स्थिति एवं विस्तार, भौगोलिक स्थिति, वर्षा, जनसंख्या इसके अंतर्गत वृद्धि दर, लिंग अनुपात, अनुसूचित जाति एवं जनजाति, साक्षरता, ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या, कृषि, उत्पादन, खनिज, उद्योग, स्वास्थ्य सेवायें शिक्षण सुविधाएं आदि को सम्मिलित किया गया हैं।

चतर्थ अध्याय में झुग्गी-झोपड़ियों में निवासित कार्यरत महिला श्रमिकों की सामाजिक, आर्थिक विशेषताओं में प्रथम-व्यक्तिगत विशेषताओं के अंतर्गत आयु, जाति, धर्म, शैक्षणिक स्तर, वैवाहिक स्थिति एवं द्वितीय भाग में पारिवारिक विशेषताओं के अंतर्गत परिवार की संरचना, आकार, सदस्यों का शैक्षणिक स्तर, कार्यरत सदस्यों की संख्या,

आयु संरचना एवं व्यवसायिक विशेषताओं के अंतर्गत पूर्व व्यवसाय छोड़ने के कारण, महिला श्रमिकों के प्रवासी प्रवृत्ति के कारण, मूल निवास जाने के अवसर, आवास व्यवस्था, स्थानीय एवं प्रवासी श्रमिक, आश्रितता भार, कामकारी महिला श्रमिकों का जिला, प्रांत, निदर्श श्रमिकों की मातृभाषा को सम्मिलित किया गया हैं।

पंचम अध्याय में निदर्श उत्तरदाता की महिला कामगारों की रोजगार की स्थिति, कार्य की दशाएं, वर्तमान कार्य के प्रति संतुष्टि एवं शिक्षा स्तर का विवरण किया गया हैं जबकि द्वितीय भाग निदर्श उत्तरदाता परिवार की महिला कामगारों की आय, उपभोग प्रवृत्ति एवं गरीबी के कारण व गरीबी निवारण कारकों से सम्बन्धित होगा।

षष्ठम अध्याय में झुग्गी-झोपड़ियों में निवासरत महिला कामगारों की स्वास्थ्य की दशाओं का वर्णन किया गया हैं।

सप्तम अध्याय में निष्कर्ष, साराशं, सुझाव को शामिल किया गया हैं।

8. प्रस्तावित अध्ययन की प्रासंगिकता

भारत की जनसंख्या में आधी जनसंख्या महिलाओं की है। वर्तमान समय में महिलाओं के विकास हेतु अनेक कार्यक्रम चलाएं जा रहे है, जिससे उनकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति समाज में मजबूत बन सके। प्रस्तावित अध्ययन महिला श्रमिकों की सामाजिक, आर्थिक विकास के साथ-साथ उनकी स्वास्थ्य की स्थिति पर आधारित है।

इस अध्ययन द्वारा गंदी बस्तियों में निवास करने वाली महिला श्रमिकों की उपभोग प्रवृत्ति व आय का स्तर, स्वास्थ्य के कारकों की जानकारी प्राप्त की जा सकेगी। यह अध्ययन निश्चित ही गंदी बस्तियों में निवास करने वाली महिलाओं की स्थिति व उनके जीवन-स्तर को उँचा उठाने में सफलता प्रदान कर सकता है।

Reference

1. Arti Mishra : women in slum (impact of environmental pollution) First Edition 2004.
2. Sengupta Padmini : Woman Works of India & Asia Publishing House Bombey, 1969.
3. Vijay Kumar Tiwari : छत्तीसगढ़ एक भौगोलिक अध्ययन, हिमालय पब्लिशिंग हाउस, मुंबई, 2001
4. A.K.and Pillai S.D. : Study of Economics Department Bombey "Housing Condition in slum in city Bombey.
5. R.K.Trivedi : "Slum A Ahamedabad city" in Desai A.K. and Pillai S.D. (edition)Slum and urbenjation, Bombey, Popular, Prakashan 1910,pg 2011.
6. Ram Chandran P. : The Slum. A note on facts and solution, edition by desai a.k. and Pillai S.D. Slums and urbanization Bombey Popular Prakashan 1970.
7. Yashwant Indra : "Life of a Slum Dwellers in Madras" Sosial welfare, XXVII April 1980, No. 1, 2 Pg.16.
8. Bose, A.N. :" The informal sector in the culcutta metro politcan Economic "World Employment programme research working paper international labour office Geneva,1974.
9. Sethi,Raj mohini, : "Woman in Agriculture" Rawat publication, Jaipur Delhi 1991.
10. Satya, R. : "Urban unorganized sector in India", Mittal publication, Delhi, 1989.
11. Bardhan, K.1985 : "Woman's work, welfare and status" Economics and political weekly, 20(50–52).
12. Agrawal, R.C. : "Role of woman in social Economics development" social welfare 23(12) March 1977 pg.18–20.
13. Banerjee, N.K. : Woman worker in the unorganiged

sector, Hyderabad:sang am.
14. Bandhan, K.1985 : "Woman's work welfare in status" Economics and political weekly 20(50–52)
15. Base, Maitrejee : "Woman in labour force" Indian worker ,17(20) February 1969 pg.6–8.
16. Chatterjee, Meera,1990 : "Indion woman : There health and economy productivity, world bank discussion paper 109, Washington D.C.

निर्देशक
डॉ.अमरकान्त पाण्डेय
प्रोफेसर
अर्थशास्त्र अध्ययन शाला
पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर(छ.ग.)

शोधछात्रा
मनीषा पाण्डेय
अर्थशास्त्र अध्ययन शाला
पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
रायपुर(छ.ग.)

विभागाध्यक्ष
प्रो.आर.प्रसाद
अर्थशास्त्र अध्ययन शाला
पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर(छ.ग.)

केन्द्र
अर्थशास्त्र अध्ययन शाला
पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर(छ.ग.)